सुरेंद्र कुमार अरोड़ा

ई-मेल-arorask1951@yahoo.com

पाकीजगी @ सात अक्टूबर

"कुछ तो सोचते भाई जान!"

"सोचना क्या था । जिस मिशन पर गए थे, उसे पूरा किया । यही तो करना था ।"

"औरतें तो चलो जाने दो, बच्चों ने क्या बिगाड़ा था जो उन पर भी कटार खींच दी ।"

"देना तो दर्द था, वो चूजों का खून देखकर ज्यादा हुआ होगा।"

"निहत्थों और मासूमों पर वार करना क्या हराम नहीं है । अल्ला नाराज हो गया तो ?"

"अबे जाने दे नाराजगी-वाराजगी, किसी वहम में मत पड़। अल्लाह का ही काम किया है। नमाज पाँच की जगह छह मर्तबा पढ़ लेंगे, वो इबादत मंजूर कर लेगा और जरूर माफ़ करेगा। तू किसी मुगालते में मत पड़। मौलवी साहब से भी बात हो गई है।"

"मगर...!"

"अगर-मगर कुछ नहीं ! अब जल्दी से तैयार होजा, जिन्हें बाँधकर लाए हैं, उनमें से एक बेहद खूबसूरत है और बेगम बनने लायक है। आज उससे निकाह करना है।"

दोनों अपने अगले काम में जुट गए जो बेहद पाक था ।

हेमंत उपाध्याय

ज़ब्त लाश

ई-मेल-:lekhakhemant17@gmail.com

छोटे भाई ने राजधानी के निजी अस्पताल से गाँव में रहने वाले बड़े भाई के वाट्सएप पर संदेश भेजा ।

आयुष्मान कार्ड के पाँच लाख तीन दिन में ही ख़त्म हो गये हैं, ऊपर से पचास हजार और लग गये हैं। अफसोस, मैं माँ को नहीं बचा सका। अस्पताल में चेक अप कराने माँ ऑटो से उतर कर पैदल चल कर गयी थी, पर अब लाश बनकर स्ट्रेचर पर घर आएगी।

जब्त लाश शवगृह से छुड़ाने के लिए साठ हजार की जरूरत है। आप सेठ जी के पास खेत गिरवी रखकर, ट्रेक्टर ट्राली लेकर रात में ही आ जाइए। सुबह से माँ की जप्त लाश छुड़ाना जरुरी है, नहीं तो एक दिन का मुर्दा घर का भाड़ा और बढ़ जायेगा।